८ यशोधरा काव्य की भाषाशैली

हिन्दी साहित्य के इतिहासमें आधुनिक काल की महत्ता इस दृष्टिसे तो है कि इसमें खड़ी बोली का प्रचलन हुआ है, उसकी यह विशेषत: उल्लेखनीय है कि दूसरी ब्रज और अवधी भाषाओंने काव्यक्षेत्र पर जो अधिकार कर रखा था उनके स्थानपर काव्य क्षेत्र में खड़ी बोली का अधिपत्य हुआ । काव्यक्षेत्रमें खड़ी-बोली के पुरस्कर्ता कवियोंमें गुप्तजी का स्थान अग्रगण्य है । और उनसे पूर्व श्रीधर पाठक आदि दो एक अन्य कवि ही ऐसे हुए, जिन्होंने काव्यक्षेत्र में खड़ीबोली को अपनाया।

गुप्तजी के शब्दभंडार तत्सम, तदभव, देशज, और विदेशी सभी प्रकार की शब्दावली दृष्टिगोचर होती, जिसमें तत्सम शब्दावली का बाहुल्य है ।

राहुल और यशोधरा की इन तत्सम शब्दमयी उक्तियो के विषयमें यह कहा जा सकता है कि इनमें इन्होने जो भाव व्यक्त किये हैं उनमें संस्कृत की शब्दावली का प्रयोग अवश्यक था किन्तु यशोधरा की यह उक्ति लीजिए जिसके विषय में यह तर्क नही दिया जा सकता, फिर भी गुप्तजीने उसमें संस्कृत की शब्दावली का विभक्तियोंसहित प्रयोग किया है -

" अब कठोर हो वज्रादपि ओ कुसुमदपि सुकुमारी ।
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी ।"

संस्कृत की शब्दावली के प्रचुर प्रयोग के साथ साथ उन्होंने कुछ संस्कृत शब्दोंका लिंग निश्चय भी संस्कृत के ही आधारपर किया है, जैसे "आत्मा" शब्द हिंदीमेंस्त्रलिंग है किन्तु संस्कृत में पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है। गुप्तजीने अन्तरात्मा शब्द का प्रयोग पुल्लिंगवाची ही किया है -

" किन्तु अंतरात्मा भी मेरा था क्या विकृत विकारी "

गुप्तजीने ब्रज अवधी और बुंदेलखडी शब्दों का भी यत्र-तत्र प्रयोग किया है । विशेषत: जहाँ कही उन्हें भाषा, माधुर्य अभीष्ट रहा है, उन्होने खडीबोली के अपेक्षाकृत कर्कश शब्दों के स्थानपर ब्रजभाषा की मधुर-शब्दावली का प्रयोग किया है ।

मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा की प्रभावक्षमता अभिवृध्द होती है और उनका सम्यक प्रयोग किसी रचनाकार के भाषापर अधिकार का परिचय दिया करता है । गुप्तजीने यशोधरा में इनका सफल एवं प्रचुर मात्रामें प्रयोग किया

" बोल युवक क्या इतीलिए है
यह यौवन अनमोल हाय । "

शब्दावली और मुहावरे और लोकोक्तियों की दृष्टिसे गुप्तजी की भाषापर विचार करने के उपरान्त उनकी भाषाशैली की विशेषताओंपर दृष्टिपात करना भी अवश्यक है । भाषाशैली की मुख्य विशेषताएँ यह होती है कि पात्र की मन:स्थिति और अवसर के अनुकूल हो, उसमें भाव-वहन की पूर्ण क्षमता हो, उसमें प्रवाहमयता हो, वह अलंकृत और लक्षणा - व्यंजना आदि शब्द शक्तियों से युक्त हो । इन विशेषताओं की दृष्टिसे यशोधरा की भाषाशैली पर विचार करे, तो सफल उतरती है ।

पात्रों की मन:स्थिति की अनुकूलता की दृष्टिसे यशोधराकी भाषाशैली पर विचार करें तो स्पष्ठ होता है कि वह सिध्दार्थ के मानसिक संघर्ष, महाराज शुध्दोदन के पितृहृदय और महाराणी प्रजावती के मातृहृदय, यशोधरा की अनुरागमयी पत्नी एवं पुत्रवत्सला मन:स्थितियों तथा राहुल की बालोचित सारल्य के अनुकूल है ।

भावाभिव्यक्ति के लिए प्रश्नशैली, उपदेशात्मक शैली, नाटयशैली आदि का आश्रय लिया जा सकता है, और गुप्तजीने इन शैलीयों को - यशोधरा में स्थान प्रदान किया है ।

द्विवेदीयुग अपने रचनाकारों की इतिवृत्तात्मक और उपदेशक दृष्टिकोण के लिए प्रसिध्द है । गुप्तजी भी मूलत: द्विवेदी युग की देन है, अत:उनकी रचनाओं में भी ये प्रवृत्तियाँ मिलती है । गृहनिष्क्रमण से पूर्व कविने सिध्दार्थ की संसार की निस्सारता और क्षणभंगुरता के विषय में जिन भावनाओं की बारबार आवृत्ति की है, उनमें इतिवृत्तात्मकता का पुट है ।

यशोधरा की भाषाशैली सभी प्रकार की विशेषताओंसे युक्त है और ऐसे स्थल कम ही है, जहाँ वह असफल प्रतीत होती है ।

१ यशोधरा काव्य का उद्देश्य

प्रत्येक साहित्यिक कृति के पीछे एक उद्देश्य छिपा रहता है। और यह उद्देश्य प्रत्यक्ष भी हो सकता है और परोक्ष भी । द्विवेदीयुग तो प्राय: प्रत्येक साहित्यिक रचना का उद्देश्य नीतिकी शिक्षा देना है क्योंकि यह सुधारवादीयुग था । कवि गुप्तजी इसी युग के कवि हैं । यही कारण है कि उनकी प्रत्येक रचना किसीन किसी लक्ष्य को लेकर हुई है ।

उपेक्षिता किन्तु गरिमामयी नारी के चरित्रांकन के हेतु यशोधरा काव्य कविने लिखा है। "यशोधरा" काव्य का उद्देश्य है पति-परित्यक्ता यशोधरा के हार्दिक दु:ख की व्यंजना तथा वैष्णव सिध्दातों की स्थापना। यशोधरा का उद्देश्य यह है कि जीवन को नियमित और संयमित बनाना है। दु:ख और सुख जीवन के अनिवार्य अंग हैं। इन दोनों में सहोदर जैसा सम्बध है। जीवन में दोनों की आवश्यकता है ।

सिध्दार्थ के त्यागव्दारा गुप्तजीने यह बताने चाहा है कि यदि मनुष्यदेवता बनना चाहता है तो उसे त्याग करना पडेगा। यशोधरा भी देवीपद प्राप्त करती है किन्तु अपने अंगित त्यागव्दाराही उसे यह पद प्राप्त होता है। वह अपने त्याग के बलपर इतनी ऊँची उठ जाती है कि अन्त में भगवान बुध्द को भी उसकी श्रेष्ठता स्वीकार करनी पडती है ।

यशोधरा के माध्यमसे गुप्तजी का प्रमुख उद्देश्य नारी जाती को उसका उचित गौरव प्रदान करना रहा है। जहाँ उन्होंने एक ओर उनकी दयनीय दशाका चित्रण इन शब्दोंमें किया है ।

" अबला जीवन हाय। तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध, और आँखो में पानी । "

नारियों सम्बधी इस प्रशंसनीय दृष्टिकोण के कारण ही गुप्तजीने महाराज शुध्दोदन के मुखसे कहलवाया है ।

" गोपा बिना गौतम भी ग्राह्य नहीं मुझको "

कविने यशोधराके मुखसे यह प्रश्न उठाया है कि जब संसार में अर्ध्द जनसंख्या नारियों की है तो फिर सामाजिक कल्याण या आत्मोध्दार के विषयमें उनका परामर्श क्यों नहीं लिया जाता? उन्हें विवाहोपरान्त यदि पुरुष सिध्दार्थ के समान त्यागकर चले जाय तो फिर उनके जीवन की गति ही क्या रह जाती है?

कवि गुप्तजीने अपने अभिमत पात्र यशोधरा के मुख से तो सिध्दार्थ की मान्यताओं का पूर्णत: खण्डन कराने की चेष्टा की है। सिध्दार्थ यह सोचकर गृहत्याग करके गये थे कि -

" घूम रहा है कैसा चक्र?
वह नवनीत कहाँ जाता है, रह जाता तक्र?"

किन्तु यशोधरा इसके सर्वथा विपरीतमत व्यक्त करती है -

" आली चक्र कहाँ चलता है?
सुना गया भूतल ही चलता भानु अचल जलता है ।"

यशोधरा का तर्क है कि चन्द्र और प्रतिदिन उदित और अस्त होने के स्वयं जन्म लेते और मरते रहते है, यही दशा पवन और मेघों की है । अत: जब प्राकृतिक पदार्थों के लिए भी मोक्ष प्राप्त करना अवश्यक नहीं है, तो फिर हम मानवों के लिए ही उसकी क्या अवश्यकता है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि यशोधरा काव्य का उद्देश्य तो यशोधरा के विस्मृत चरित्र प्रकाश में लाना है । और गुप्तजीने वैष्णव मान्यताओं की बौध्द मान्यताओं की अपेक्षा वरेण्यता भी दिखानी चाही है, और उसमें वह पर्याप्त सिमातक सफल रहा है ।